बांग्लादेश अभ्युदय के पश्चात भारत–पाकिस्तान सम्बन्ध

डॉ0 अमितेन्द्र प्रताप सिंह*

दक्षिण एशियाई क्षेत्र का नेतृत्व करने वाले देशों में भारत और पाकिस्तान प्रमुख देश है। भारत और पाकिस्तान पड़ोसी देश भी है। दोनों के मध्य ऐतिहासिक समानता, सांस्कृतिक एकरूपता, भौगोलिक सामीप्य, आर्थिक अन्तः निर्भरता के बावजूद मित्रता के बजाय दूर पड़ोसियों वाले सम्बन्ध बने रहे है। स्वतन्त्रता प्राप्ति से आजतक इनके सम्बन्ध स्पर्धा, संघर्ष एवं युद्ध के दायरे से बाहर नहीं निकले है। इनके सम्बन्ध संघर्ष से शान्ति, फिर संघर्ष, फिर शान्ति की ओर अग्रसर हुए है परन्तु मित्रता व सहयोग से परे रहे है। भारत और पाकिस्तान के सम्बन्धों की यदि समीक्षा करे तो ज्ञात होगा कि इनके मध्य लगातार शीतयुद्ध व चार बार वास्तविक युद्ध हो चुका है। दोनों के मध्य काफी अल्प समयान्तराल तक तनाव शैथिल्य या मधुर सम्बन्धों का काल रहा है।

12 अप्रैल 1971 को पूर्वी पाकिस्तान ने अपने को स्वाधीन घोषित कर दिया। विशाल संख्या में शरणार्थी सीमा पर से भारत आने लगे। इस पूर्वी पाकिस्तान ने बांग्लादेश के नाम से विश्व मानचित्र पर अपनी जगह बना ली। 17 अप्रैल, 1971 को बांग्लादेश में विधिवत गणराज्य की घोषणा कर दी गयी। विभिन्न दबावों के बावजूद भारत ने बांग्लादेश के मान्यता के प्रश्न पर संयम का परिचय दिया। पाकिस्तान ने (पश्चिमी पाकिस्तान) इन सभी घटनाओं का दोषी भारत को ठहराया। बांग्लादेश में हो रहे नरसंहार, शरणार्थियों की बाढ़ बांग्लादेश की मान्यता सम्बन्धी प्रश्न, पाकिस्तान द्वारा दी जा रही धमकियां, पाश्चात्य देशों एवं चीन का भारत विरोधी दृष्टिकोण के मद्देनजर, 9 अगस्त 1971 को भारत ने ''भारत–सोवियत मैत्री एवं सहयोग'' सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिये ताकि आकस्मिक युद्ध की आशंका से निपटा जा सके।

परन्तु स्थितियां प्रतिदिन विस्फोटक होती जा रही थी। पूर्वी पाकिस्तान की सीमा पर निरन्तर छोटी–मोटी घटनाएं घटित हो रही थी। अंततः पाकिस्तान ने 3 दिसम्बर 1971 को पश्चिमी भारत पर आक्रमण कर दिया। भारत ने जवाब में 4 दिसम्बर को युद्ध किया और 6 दिसम्बर को बांग्लादेश को पृथक व स्वतन्त्र

***पूर्व शोध छात्र, रूहेल खण्ड विश्वविद्यालय, बरेली उत्तर प्रदेश**

राष्ट्र के रूप में मान्यता दे दी। पूर्वी सीमा पर युद्ध में पाकिस्तान परास्त हुआ तथा उनके युद्ध प्रमुख जनरल ने आत्मसमर्पण कर दिया। आत्मसमर्पण के साथ ही भारत ने पश्चिमी क्षेत्र में एक तरफा स्वैच्छिक युद्ध विराम की घोषणा कर दी।

इस युद्ध के बाद पाकिस्तान और भारत की विदेशनीति में मूलभूत परिवर्तन हुए। भारतीय विदेशनीति सोवियत संघ के निकट होती गई और अमेरिका के साथ सम्बन्धों में दूरिया बढ़ती गयी। पाकिस्तान भी अमेरिका के सहयोग के आश्वासनों की अपेक्षा से बाहर आ चुका था। इनके अनुरूप भारत और पाकिस्तान के सम्बन्धों में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। युद्धोपरान्त दोनों देशों ने वास्तविक धरातल पर आकर सम्बन्धों को सुधारने का प्रयत्न किया इसलिए कई विशेषज्ञों ने 1972–1979 के वर्षों को भारत–पाक तनाव शैथिल्य की संज्ञा दी। इस बदलाव का कारण भारत व पाकिस्तान की परिवर्तित परिस्थितियाँ थी।[1]

भारत के सन्दर्भ में यह परिवर्तन दक्षिण एशिया में उभरी हुई उसकी मजबूत स्थिति थी इसके अतिरिक्त भारत की अन्तर्राष्ट्रीय साख एवं सामरिक क्षमता की मान्यता में भी वृद्धि थी। इधर पाकिस्तान सैनिक शासन को समाप्त करके लोकतान्त्रिक मूल्यों की ओर अग्रसर हुआ तथा आर्थिक विकास हेतु महत्वपूर्ण साहसिक कदम उठाये। अन्ततः युद्ध से जुड़े मुद्दों, विशेषकर 93 हजार युद्धबन्दियों की रिहाई, का दबाव उन्हें अपने विदेशी सम्बन्धों का मूल्यांकन करने हेतु बाध्य करने लगा। परिवर्तित परिस्थिति एवं उपर्युक्त समस्याओं को देखते हुए पाकिस्तान के प्रधानमंत्री भुट्टो ने भारत के साथ बात करने की पहल की। दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों (भुट्टों व श्रमती इन्दिरा गांधी) का प्रयास ''शिमला समझौता'' (3 जुलाई, 1972) के रूप में सामने आया। इस समझौते की कुछ मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित थी –

(क) दोनों देशों ने एक दूसरे को क्षेत्रीय अखण्डता एवं राजनैतिक स्वतन्त्रता के विरूद्ध धमकी न देने या शस्त्रों को प्रयोग न करने का वचन दिया।

(ख) दोनों देश आपसी मतभेदों को शान्तिपूर्ण द्विपक्षीय वार्ता के द्वारा हल करेंगे।

(ग) दोनों देश आपसी द्विपक्षीय सम्बन्धों की वृद्धि के लिए 1. डाक–तार, वायु समुद्री तथा स्थल सम्बन्ध बनायेंगे 2. नागरिकों को यात्रा सुविधा देंगे। 3. आर्थिक एवं व्यापारिक सम्बन्ध बनायेंगे तथा 4. वैज्ञानिक एवं आर्थिक अदला–बदली का विकास करेंगे।

(घ) दोनों देश अपनी–अपनी सेनाओं को 30 दिन के अन्दर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तक वापस कर लेंगे। यहाँ सीमा से तात्पर्य 17 दिसम्बर 1971 को युद्ध विराम की नियन्त्रण रेखा माना गया है।[2]

शिमला समझौते के बाद भी युद्धबिन्दयों की रिहाई का मामला तय नहीं हो पाया, क्योंकि भारत इसे बांग्लादेश की सहमति से ही हल करना चाहता था।[3] बांग्लादेश नरसंहार करने वाले सैनिक अधिकारियों के विरूद्ध मुकदमा चलाना चाहता था परन्तु पाकिस्तान इसे मानवीय विवाद मानकर द्विपक्षीय स्तर पर हल करना चाहता था।

पाकिस्तान और बांग्लादेश के सम्बन्धों की शुरूआत फरवरी, 1974 को पाकिस्तान द्वारा बांग्लादेश को मान्यता देने के बाद हुई। अप्रैल 1974 को भारत, पाकिस्तान व बांग्लादेश के मध्य सम्पन्न एक समझौते के तहत युद्धबन्दियों की वापसी पर सहमति भी हो गयी।

1974 व 1975 के मध्य भारत और पाकिस्तान के मध्य कुछ व्यापारिक समझौते भी हुए लेकिन 18 मई 1974 को भारत द्वारा पोखरन में शान्तिपूर्ण उद्देश्यों के लिए किये गये परमाणु परीक्षण से दोनों देशों के मध्य तनाव की स्थिति पुनः उत्पन्न हो गयी।[4] तनाव के बावजूद दोनों देशों में सहयोग बढ़ाने की दृष्टि से कई व्यापारिक एवं गैर व्यापारिक समझौते किए। 1997 में दोनों देशों में सत्ता परिवर्तन हुआ लेकिन सम्बन्धों में सुधार जारी रहा।[5]

1979 में एक तरफ सोवियत संघ द्वारा अफगानिस्तान में हस्तक्षेप से नवशीत युद्ध का आरम्भ हुआ दूसरी तरफ दक्षिण एशिया के राज्यों (भारत–पाकिस्तान) के मध्य सम्बन्धों में भी नये समीकरण उत्पन्न होने लगे इसके पीछे कारण यह हो सकता था कि 1971 के युद्ध के बाद पाकिस्तान में सैनिक शासक जिया–उल–हक ने प्रशासन पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली थी और उस समय भारत विभिन्न अलगाववादी आन्दोलनों की चपेट में रहने के साथ–साथ क्षेत्रीय स्तर पर अपने निकटवर्ती पड़ोसियों बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका के संग कुछ विवादों में उलझा हुआ था। अन्ततः अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सोवियत संघ द्वारा अफगानिस्तान में हस्तक्षेप तथा वियतनाम द्वारा कम्बोडिया में हस्तक्षेप का भारत व पाकिस्तान के सम्बन्धों पर विपरीत प्रभाव पड़ा।[6] इस घटनाक्रम से महाशक्तियों के संघर्ष में पाकिस्तान का महत्व बढ़ गया था तथा उसे 'सीमा रेखा' वाला राज्य घोषित कर दिया गया था। परिणामस्वरूप उसे पाश्चात्य पश्चिम एशिया के मुस्लिम देशों से आर्थिक, सैनिक और राजनयिक सहायता भी प्राप्त हुई। और इधर भारत को सोवियत संघ, अफगानिस्तान एवं वियतनाम के साथ अपने मित्रवत सम्बन्धों के बारे मे स्पष्टीकरण देने पड़े। भारत और पाकिस्तान के मध्य सम्बन्ध तनावपूर्ण हो जाने के पीछे इस दौरान कुछ अन्य कारण सिद्ध हुए। भारत द्वारा सोवियत संघ का अफगानिस्तान में हस्तक्षेप का खुला समर्थन पाकिस्तान को अमेरिका के नजदीक ले गया। अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को भारी मात्रा में सैनिक सहायता

देने तथा पाक द्वारा चीन से हथियारों की प्राप्ति से पाकिस्तान की सैन्य क्षमता बढ़ गयी। इसके उत्तर में भारत ने भी सोवियत संघ से 1980 –81 में हथियारों का सौदा किया। इस प्रकार दोनों देशों द्वारा काफी मात्रा में हथियारों की प्राप्ति से सम्बन्धों में और गिरावट आयी।[7]

1980–1988 के भारत–पाकिस्तान सम्बन्धों में कई उतार–चढ़ाव देखने को मिले। भारत और पाकिस्तान द्वारा परमाणु क्षमता प्राप्त करना भी इस दशक मे दोनों के गैरमित्रतापूर्ण सम्बन्धों का परिचायक रहा है। भारत द्वारा 1974 में शान्तिपूर्ण उद्देश्यों हेतु परमाणु क्षमता हासिल करने के बाद पाकिस्तान ने भी 1984 में 'यूरेनियम संवर्द्धन' तथा 1987 में परमाणु बम की क्षमता प्राप्त कर ली।[8] परमाणु क्षमता से जुड़ा एक अन्य मुद्दा दोनों देशों द्वारा प्रक्षेपास्त्रों की प्राप्ति करना रहा है। भारत ने 1983 में अपने एकीकृत प्रक्षेपास्त्र विकास, कार्यक्रम के तहत स्वदेशी प्रक्षेपास्त्र विकसित कर लिए, जैसे 'त्रिशूल,' अग्नि, 'आकाश', नाग, 'पृथ्वी' धनुष, ब्रह्मोस आदि। विरोध में पाकिस्तान ने भी चीन, अमेरिका एवं सऊदी अरब के सहयोग पर आधारित प्रक्षेपास्त्र क्षमता में बृद्धि करना प्रारम्भ किया। इस प्रक्रिया के दौरान दोनों देशों के एक दूसरे पर विश्वास की भावना कतई नही रह गयी तथा सम्बन्धों में और दूरियों ने घर किया।[9] सियाचिन ग्लेशियर भी दोनों देशों के मध्य तनाव का एक अन्य मुद्दा रहा है जिस पर 1984 में पाकिस्तान द्वारा कब्जा करने की कार्यवाही से दोनों देश आमने–सामने भी आ चुके हैं उसके बाद दोनों देशों द्वारा आपसी बातचीत द्वारा जो समाधान निकले वो निम्नांकित है–

1. दोनों देशों ने (6 अप्रैल, 1991) को आपस में किये जाने वाले सैनिक अभ्यासों की पूर्व सूचना, एक दूसरे को देने की सहमति दी।

2. दोनों दे,श, अपने–अपने देशों के सैन्य कार्यवाही करने वाले डायरेक्टर जनरल के बीच सीधी बातचीत करने पर सहमत हो गये जिससे गलत अनुमानों पर आधारित तनाव को खत्म किया जा सके।

3. 31 अक्टूबर 1991 को युद्ध में रासायनिक शस्त्रों के प्रयोग के निषेध पर भी दोनों देशों ने अपनी सहमति दी।[10]

परमाणु अप्रसार के विशय में भी पाकिस्तान ने जून, 1991 के प्रस्ताव में दक्षिण एशिया में इस समस्या को बहुपक्षीय सम्मेलन के आधार पर हल करने को कहा जिसमें भारत, पाकिस्तान के अलावा अमेरिका, रूस चीन भी शामिल थे, परन्तु भारत इसके लिए तैयार नही हुआ क्योंकि वह विश्व में परमाणु अप्रसार सम्बन्धी सभी समझौतों को भेदभावपूर्ण मानता है। अतः ऐसे किसी समझौते को स्वीकृति देना तर्कसंगत नहीं हैं।[11]

उपरोक्त प्रयासों से ऐसा लगा कि दोनों देशों के बीच विष्वास बृद्धि की दिषा में कुछ प्रगति हुई परन्तु यह प्रगति भी बहुत आशाजनक नहीं साबित हो पायी। दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग संगठन एक ऐसा मंच है जिसके माध्यम से कुछ प्रगति को दिशा निर्देश मिल सकता है लेकिन वहाँ इन दोनों देशों की भूमिकाएं अधिक सहयोगी प्रतीत नही होती और जब तक इन दोनों देशों के मध्य उपस्थित अवरोधक तत्व समाप्त नहीं हो जाते ऐसा सोचना एक कल्पना मात्र होगी।

भारत और पाकिस्तान के बीच पनप रहा वैमनस्य और उग्र हो गया जब मई 1992 में इस्लामाबाद में भारत के उच्चायुक्त राजेश मित्तल को परेशान करके अन्ततः देश छोड़ने को मजबूर किया गया।[12] शायद ऐसा इसलिए किया गया क्योकि मार्च 1992 में भारतीय सुरक्षा बलो ने दिल्ली व पंजाब में कार्यरत पाकिस्तानी गुप्तचरों को पकड़ लिया था। प्रत्युत्तर में भारत ने पाकिस्तान उच्चायोग के दो अधिकारियों को न केवल निरस्त किया बल्कि जून 1992 में होने वाली सचिव स्तरीय बातचीत को भी रद्द कर दिया।

6 दिसम्बर, 1992 को भारत के अयोध्या में 15वीं शताब्दी की बाबरी मस्जिद को हिन्दू समर्थकों द्वारा तोड़ दिये जाने पर पाकिस्तानी सरकार ने इसके लिए भारतीय सरकार को दोशी बताया और पाकिस्तान में स्थिति कई मन्दिर तोड़वा दिये। इस घटनाक्रम से 'द्विराष्ट्रीय सिद्धान्त' व 'धर्म निरपेक्षता' का संघर्ष पुनः जीवित हो उठा।[13]

12 मार्च 1993 को भारत के बम्बई में हुए लगातार बम काण्डों में हुए अपार जान–माल की हानि के पीछे, भारत ने पाकिस्तान की गुप्तचर एजेन्सी आई0एस0 आई0 का हाथ बताया। पाकिस्तान ने इसका खण्डन किया, परन्तु उसका इन्कार उसकी नीतियों के विरूद्ध प्रतीत होता है क्योंकि भारत के कहने पर पाकिस्तान ने उन बम विस्फोट के जिम्मेदार लोगों को भारत नही भेजा जो यू0ए0ई0 तथा सऊदी अरब से होते हुए पाकिस्तान पहुँचे थे।[14]

उपरोक्त तत्वों के कारण भारत और पाकिस्तान में दूरियां बढ़ती गयी। फिर 1996–97 में भारत द्वारा पड़ोसी देशों से सम्बन्ध सुधारने हेतु 'गुजराल सिद्धान्त' को अपनाने के पश्चात दोनों देशों की स्थिति में कुछ परिवर्तन आया। परिणामस्वरूप 28 से 31 मार्च, 1997 को दोनों देशों के विदेश सचिवों की वार्ता आरम्भ हुई, जिसे 'नई शुरूआत' की संज्ञा दी गई।[15] इसके अलावा नौवें सार्क शिखर सम्मेलन में दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों के बीच संयुक्त कार्यदल बनाने पर समझौता हो गया तथा विदेश सचिवों को इसकी कार्य सूची तैयार करने को कहा गया अतः दोनों देशों के मध्य 'ढ़ाचागत वार्ताओं' का दौर शुरू हो गया।[16]

परन्तु उपरोक्त घटनाएं भी बांधा रहित नहीं हैं। अगस्त–सितम्बर, 1997 को नियन्त्रण रेखा के 'उरी' क्षेत्र पर पाकिस्तान द्वारा बिना कारण गोलाबारी करने से पुनः संकट का माहौल बन गया। कश्मीर, सियाचिन, बुलर, तुलबुल, सिचाई परियोजना, सर क्रिक आदि मूलभूत मूद्दों के समाधान के बिना स्थाई सम्बन्ध सुधारों की सम्भावनाएं अति अल्प हैं । परमाणु हथियारों और प्रक्षेपास्त्रों का मुद्दा अभी भी विवादास्पद स्थिति में बना हुआ है। अन्ततः पाकिस्तान की घरेलू स्थिति व सम्बन्ध सुधारों से वहाँ की सेना की भूमिका पर पड़ने वाले प्रभावों को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता।

मई 1998 को भारत और फिर पाकिस्तान द्वारा परमाणु परीक्षणों के बाद जहाँ एक ओर दोनें राष्ट्रों के परमाणु शक्ति वाले राष्ट्र बनने से परमाणु प्रसार व दक्षिण एशिया में अणु हथियारों की होड़ को बढ़ावा मिला, वही दूसरी ओर इस प्रक्रिया के स्वरूप दोनों देशों के सम्बन्धों में सकारात्मक परिवर्तन भी आया। दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने सार्क के कोलम्बों शिखर सम्मेलन में बातचीत की।

उसके बाद सितम्बर, 1998 में भारत–पाक विदेश मंत्रियों के बारहवें गुटनिरपेक्ष आन्दोंलन के शिखर सम्मेलन में बातचीत हुई इसी समय दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों की संयुक्त राष्ट्र महासभा के सम्मेलन में न्यूयार्क में हुई वार्ताओं का सार्थक परिणाम दृष्टिगत हुआ। इस सम्मेलन में दोनों देशों के बीच विवादास्पद आठ मुद्दों में से दो मृद्दों (कश्मीर एवं शान्ति व सुरक्षा) को छोड़कर शेष के छः मुद्दों को पृथक कर दिया गया। इस कार्यसूची का यह लाभ हुआ कि कश्मीर एवं शान्ति व सुरक्षा के जटिल मुद्दों के रहते हुए भी अन्य शेष मुद्दों पर सहमति का मार्ग प्रशस्त हो सकता था। इसी वार्ता के अर्न्तगत भारत और पाकिस्तान के बीच 'बस सेवा' चलाने के मुद्दें पर न्यूयार्क में सहमति हो गई ।

20 फरवरी, 1991 को भारत के प्रधानमंत्री बाजपेयी के बस से लाहौर यात्रा द्वारा दोनों देशों के सम्बन्धों में एक नया आयाम जुड़ा दोनों देंशों के बीच इस बदले हुए राजनय के पीछे निम्न कारण उत्तरदायी रहे–

1. भारत परमाणु अप्रसार सम्बन्धी अपनी नीतियों को स्पष्ट रूप से उजागर करना चाहता था।
2. दोनों राष्ट्रों व्यापक परमाणु परीक्षण निषेध सन्धि पर हस्ताक्षर के लिए अत्यधिक दबाव पड़ रहा था।
3. 1998 के परीक्षणों के बाद परमाणु हथियार सम्पन्न राष्ट्र बनने से दोनों देशों के मध्य परमाणु क्षमता नियंत्रण आवश्यक था।

भारत के प्रधानमंत्री अटलविहारी बाजपेयी पाकिस्तान के दो दिवसीय

यात्रा पर गये और यात्रा के दौरान तीन प्रमुख दस्तावेजों–सहमति के ज्ञापन, संयुक्त वक्तव्य तथा लाहौर घोषणा–पत्र पर हस्ताक्षर किये। 21 फरवरी, 1999 को हस्ताक्षरित लाहौर घोषणा–पत्र में दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों ने इस बात पर बल दिया कि वे अपने देशों के मध्य शान्ति व स्थायित्व की किरण देखते हैं। उन्होंने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि दोनों देशों के मध्य व्यापक एवं एकीकृत बातचीत को और आगे बढ़ाया जाय तथा गति प्रदान की जाय। उन्होने आतंकवाद की निन्दा व भर्त्सना की। इसके अलावा दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों के संयुक्त वक्तव्य के आधार पर यह सहमति हुई कि–दोनों देश 'दक्षेस' की गतिविधियों में एक दूसरे को सहयोग देंगे, विश्व व्यापार संगठन में एक दूसरे का सहयोग करेंगे, सूचना तकनीकि, विशेष कर 'वाई टू के' के सन्दर्भ में दोनों एक दूसरे के सहयोग में बद्धि करेंगे। लाहौर घोशणा–पत्र के अर्न्तगत इन दोनों ने शिमला समझौता में भी अपनी बचनवद्धता को दोहराया।[17]

यद्यपि लाहौर यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच किसी विवादास्पद मुद्दे पर सन्धि नहीं हो पायी परन्तु दोनों देशों के पृष्ठभूमि के मद्देनजर लाहौर घोषणा–पत्र एक महत्वपूर्ण उपलब्धि कही जा सकती है परन्तु लाहौर घोषणा के परिणाम अभी आये नही थे कि पाकिस्तान ने एक सुनियोजित योजना के तहत सितम्बर 1998–फरवरी 1999 के बीच भारी मात्रा में घुसपैठियें, कट्टरवादी व अपनी सेना को भारत की ओर नियंत्रण रेखा के सात किमी0 अन्दर तक 150 से 200 वर्ग किमी0 क्षेत्र में कारगिल द्रास–बटालिक क्षेत्र में तैनात कर दिया। इसके बाद मई 1999 से पाकिस्तान ने छिटपुट गोलाबारी आरम्भ कर दी और मई के तिसरे सप्ताह तक इस छिटपुट गोलाबारी ने भयंकर युद्ध का रूप ले लिया। भारत 'आपरेशन विजय' के माध्यम से नियंत्रण रेखा स्थित अपने क्षेत्रों को खाली कराने में सफल हुआ।

उपरोक्त कारणों से पाकिस्तान सरकार जहाँ एक ओर कश्मीर मुद्दे का अन्तर्राष्ट्रीयकरण करके हल करना चाहती है वही दूसरी ओर नियंत्रण रेखा को पाकिस्तान के पक्ष में रखने पर बल देती है अतः यह युद्ध पाकिस्तान के बहुआयामी उद्देश्यों को परिलक्षित करता है।[18]

12 अक्टूबर 1999 को अचानक नवाजषरीफ सरकार का तख्तापलट कर, एक बार पुनः पाकिस्तान में सैनिक शासन स्थापित हो गया। सेनाध्यक्ष परवेज मुशर्रफ कार्यकारी अध्यक्ष बने और बाद में स्वयं को राष्ट्रपति घोषित किया। पाकिस्तान में लोकतन्त्र का गलाघोटकर आबाद सैनिक शासन के परिणाम स्वरूप भारत और पाकिस्तान के सम्बन्धों में नया मोड़ आया, तथा कश्मीर में आतंकवाद

और तेज हो गया। दिसम्बर 1999 में भारत के विमान का अपहरण कर अफगानिस्तान ले जाया गया और सात दिन तक यात्रियों को बंधक बनाकर रखा गया। भारत के पास इस बात के पुख्ता प्रमाण है कि अपहरण कर्ता पाकिस्तानी नागरिक थे।

भारत ने लगातार कई वर्शों तक पाकिस्तान के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाने की हर सम्भव कोशिशें की, परन्तु उनका कोई सार्थक परिणाम नहीं आया। भारत की ही पहल पर आयोजित आगरा शिखर सम्मेलन में भी पाकिस्तानी राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ की पैंतरे बाजी से भारत–पाक सम्बन्ध मधुर होंने आसार खत्म हो गये।

जेहादी आतंकवाद का केन्द्रविन्दु आज पाकिस्तान बन गया है। पाकिस्तान के जनक जिन्ना जेहादी पाकिस्तान नहीं चाहते थे आम जनता भी इसका पूरी तरह से विरोध करती है। सेना में इसका समर्थन पाकिस्तान के इस्लामीककरण के साथ–साथ हुआ। इस प्रक्रिया में पाकिस्तान इतना गहरा पैठ गया कि न केवल सेना का इस्लामीकरण हुआ वरन् समाज के एक हिस्से को भी अपनी जहिलियत का निजात धर्म में नजर आने लगा। पाकिस्तान सैन्य नेतृत्व का प्रयोग कश्मीर के लिए कर रहा है। इसके अलावा अक्टूबर, 2001 में जम्मू–कश्मीर विधानसभा पर फिदायीन हमला 13 दिसम्बर 2001 को भारत की राजधानी दिल्ली स्थित संसद भवन पर असफल आतंकवादी हमला, मार्च, 2002 को जम्मू कालचूक में मासूम बस यात्रियों का नर संहार आदि घटनायों ने भारत और पाकिस्तान के बीच अनिवार्य युद्ध जैसा वातावरण तैयार कर दिया। वर्श 2005 में भारत तथा पाकिस्तान के सम्बन्धों में सकारात्मक बदलाव आया 16 अप्रैल 2005 को 'क्रिकेट कूटनीति' के अंग के रूप में मुशर्रफ भारत आये तथा यात्रा के दौरान हुई बातचीत के बाद 'भारत–पाक साझा घोषणा भी जारी की गयी।

18 अप्रैल, 2005 को दिल्ली में दोनों देशों के बीच बातचीत में ऐसे ठोस मुद्दों पर प्रगति हुई जिस पर पहले दोनों देशों ने अड़ियल रूख अपना रखा था। ये मुद्दे हैं–जम्मू–कश्मीर, आतंकवाद, व्यापार, वाणिज्य, दूतावास, नियंत्रण रेखा, सियाचिन, बगलीहार आदि।

भारत–पाक सम्बन्धों में और निकटता तब आयी जब 20 जनवरी 2006 को लाहौर और अमृतसर के बीच बहुप्रतीक्षित बस सेवा प्रारम्भ हुई। 2007 में दोनों देशों ने परमाणु हथियार के दुर्घटनावश इस्तेमाल के जोखिम में कमी लाने के समझौते पर हस्ताक्षर किये। 27 दिसम्बर 2007 को पाकिस्तान की पूर्व प्रधानमंत्री बेनजीर भुट्टो की हत्या कर दी गयी। इस घटना से पाकिस्तान के आधुनिकीकरण की ताकतों को धक्का पहुँचा।

सम्बन्धों में तनाव और अनिष्चितता का एक नया युग तब आरम्भ हुआ जब 26 नवम्बर, 2008 को पाकिस्तान स्थित आतंकवादियों ने मुम्बई में आतंकवादी हमला किया और उन आतंकवादियों के विरूद्ध ठोस सबूत होने के बावजूद कोई कार्यवाही नही की गयी। भारत विवश होकर समग्र वार्ताओं में भाग लेने से मना कर दिया। मुम्बई पर 26 नवम्बर 2008 को हुए आतंकी हमले के कारण सम्बन्धों में आये ठहराव के लगभग दो वर्श बाद भारत और पाकिस्तान फिर से समग्र वार्ता प्रक्रिया शुरू करने को तैयार हो गये। जुलाई 2011 में पाकिस्तानी विदेश मंत्री की सम्भावित भारत यात्रा से पहले इस वार्ता का नई दिल्ली में विदेश मंत्रालय ने 10 फरवरी 2011 को रोड मैप पेश किया। इस दौरान आतंकवाद, 26/11 कांड की सुनवायी की स्थिति और जम्मू–कश्मीर जैसे सभी मुद्दों पर वार्ता होगी। भूटान की राजधानी थिम्पू में दक्षेस देशों के विदेश सचिवों के बैठक से इतर भारत व पाकिस्तान के विदेश सचिवों के बीच 6 फरवरी, 2011 को हुई बातचीत के दौरान बनी सहमति के आधार पर आगे वार्ता की रूप रेखा तैयार की गयी दोनों देशों के गृह सचिव काउन्टर टेररिज्म के मसले पर बातचीत करेंगे। इनमें रावलपिंडी की अदालत में 26/11 मामले की चल रही सुनवाई, मानवीयता के मुद्दों, शान्ति एवं सुरक्षा, जम्मू–कश्मीर, मित्रवत आदान प्रदान को बढ़ावा सियाचिन और आर्थिक मुद्दे शामिल होंगे। बुलर बैराज या तुलबुल नौवहन परियोजना और सर क्रीक जैसे मुद्दों पर बातचीत के अतिरिक्त सचिव या महासर्वेक्षक स्तर पर भी बातचीत होगी। बयान में सूचीबद्ध सभी मुद्दों को समग्र वार्ता में षामिल किया गया है।

भारत के विदेश मंत्री एस0 एम0 कृष्णा ने 7–9 सितम्बर, 2012 को पाकिस्तान की तीन दिवसीय राजकीय यात्रा सम्पन्न की। कृष्णा ने 7 सितम्बर, 2012 को इस्लामाबाद पहुंचने के साथ ही पाकिस्तान की विदेश मंत्री हिना रब्बानी खार से द्विपक्षीय मुद्दों पर विस्तृत बातचीत की। विदेश मंत्री की इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के मध्य नये वीजा करार पर हस्ताक्षर हुए तथा पाकिस्तान राष्ट्रीय कला परिषद् और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के मध्य 'संस्कृति के क्षेत्र में सहयोग पर समझौता ज्ञापन' भी हस्ताक्षरित हुआ।

यह भारत और पाकिस्तान के मध्य वीजा प्रणाली में 1974 के बाद पहला प्रमुख नवीकरण था। नये वीजा करार के तहत भारत और पाकिस्तान में क्रमशः अटारी और वाघ सीमा पर पहुँचने पर वरिष्ठ नागरिकों को 'आगमन पर वीजा' (Visa on Arrival) सुविधा उपलब्ध करायी जायेगी।

उल्लेखनीय है कि 6 सितंबर, 2012 को इस्लामाबाद में 'भारत–पाकिस्तान संयुक्त आयोग' की बैठक (वर्ष 2007 के बाद पहली बार) हुई थी जिसमें कृषि, शिक्षा, पर्यावरण, स्वास्थ्य, सूचना, आईटी एवं दूरसंचार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

तथा पर्यटन पर आठ तकनीकी स्तरीय कार्य समूहों (TLWG) ने विचार–विमर्श किया था तथा संबंधित क्षेत्रों में परस्पर लाभप्रद सहयोग के अवसरों की पहचान की थी।

पाकिस्तान के गृह मंत्री अब्दुल रहमान मलिक ने 14–16 नवम्बर, 2012 को तीन दिवसीय भारत की यात्रा संपन्न की। इस दौरान भारत और पाकिस्तान ने 14 नवम्बर, 2012 को औपचारिक तौर पर नई वीजा व्यवस्था की शुरूआत कर दी। दोनों देशों के बीच सितम्बर, 2012 में उदार वीजा समझौते पर हस्ताक्षर हुए थे, जो अब लागू हो गया।

9 मार्च, 2013 को पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री राजा परवेज अहमद निजी यात्रा पर भारत आये थे। उनकी इस यात्रा का उद्देश्य अजमेर स्थित ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर जियारत करना था। इस यात्रा के दौरान कोई औपचारिक वार्ता नहीं हुई। हाल ही में सीमा पर भारतीय सैनिक का सिर काटने की बर्बर घटना के परिप्रेक्ष्य में भाजपा, कारणी सेना व अन्य हिन्दूवादी संगठनों ने परवेज अहमद की इस यात्रा का विरोध किया तथा कड़ी सुरक्षा के बावजूद उनके समक्ष पाकिस्तान के विरूद्ध नारे लगाये।

12 मई, 2013 को भारतीय प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह ने पाकिस्तान के आम चुनावों में विजय के लिए नवाज शरीफ एवं उनकी पार्टी पीएमएल (एन) को बधाई दी तथा उन्हें भारत की यात्रा का औपचारिक निमंत्रण भी दिया। हाल ही में हुए पठानकोट आतंकी हमले के पश्चात् भारत तथा पाकिस्तान सम्बन्ध पुनः कटुतापूर्ण हो गये।

यह सत्य है कि जल्द ही अगर आतंकवाद का हल न खोजा गया तो दोनों देशों के बीच युद्ध होना अन्तिम विकल्प होगा। युद्ध की संभावनाओं को टालना अब पाकिस्तान पर निर्भर है। पाकिस्तान ने विश्व समुदाय के दबाव में यह घोषणा की कि वह आतंकवाद को प्रश्रय देने वाले संगठन को दण्ड देगा और भारतीय सीमा में घुसपैठ को रोकेगा। पाकिस्तान घोषणाओं पर कितना अमल करता है यह तो समय की बात है। पाक सैनिक नेतृत्व यह अच्छी तरह जानते हैं कि भारत की प्रतिष्ठा और सैन्य शक्ति की तुलना में उनकी वास्तविकता क्या है। दोनों मुल्कों की गरीबी, निरक्षरता और कुपोषण से मुक्ति के लिए उनके विरूद्ध कठिन लड़ाई लड़नी है। अगर यकीनन पाक जनरलों ने अपने सोचने समझने का तरीका बदल दिया तो उनके लिए अपने अतीत के बोझ से मुक्त हो जाने का यही सही वक्त है। सम्पूर्ण विश्व और भारत उसका मूल्यांकन उनकी कथनी से नहीं, करनी से करेगा।

पाकिस्तान यह कहता है कि घुसपैठ और आतंकवाद के पीछे मुख्य कारण कश्मीर समस्या का अनुसुलझा रहना है इसलिए समस्या की जड़ पर हमला करने के लिए भारत को पाकिस्तान के साथ बातचीत शुरू करनी होगी। भारत यह साफ कर चुका है कि बातचीत के लिए पहले पाकिस्तान को अनुकूल माहौल बनाना होगा। उसे अपने यहां आतंकवादी प्रशिक्षण ढांचे को खत्म करना होगा, कश्मीर में घुसपैठ पर पूरी तरह स्थायी रोक लगानी होंगी तथा सीमा पार आतंकवाद रोकना होगा।

कश्मीर भारत और पाक के बीच तनाव का मुख्य विषय है दोनों देश उस छोर पर पहुँच चुके हैं जहां से विश्व में प्रथम परमाणु युद्ध छिड़ सकता है। यद्यपि कश्मीर समस्या का अन्तर्राष्ट्रीयकरण हो चुका है, परन्तु फिर भी भारत कश्मीर की समस्या में मध्यस्थता अथवा पंचफैसला स्वीकार नहीं करना चाहता क्योंकि वह कश्मीर को एक द्विपक्षीय मुद्दा मानता है।

घुसपैठ न होने देने के लिए सीमाओं पर निगरानी के लिए भारतीय और पाकिस्तानी सैनिकों के साथ यदि संप्रभु राष्ट्र के तत्वाधान में कोई दल रहे तो संभवतः इससे कोई हानि नहीं है। एक लाभ ही है। अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय चाहता है कि भारत और पाकिस्तान वार्ता की मेज पर साथ–साथ बैठे ताकि समस्याओं का हल निकल सके।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची –

1. मोहम्मद अयूब, इंडिया एण्ड पाकिस्तान : प्रोस्पेक्टस फॉर देतान्त, के0पी0 मिश्र सम्पदक, फॉरेन पॉलिसी ऑफ इंडिया : ए बुक ऑफ रिडिंगज, नई दिल्ली, 1977 पृ0 213–230।
2. एशियन रिकार्डर, 15–21 जुलाई, 1972 पृ0 10874–78।
3. सुरेन्द्र चोपड़ा, इण्डो पाक रिलेशंस : ए स्टडी ऑफ न्यू चैलेंजिंग एण्ड अपोरचूनिटज, स्वयं संपादक, स्टीडीज इन इंडियाज फॉरेन पॉलिसी, अमृतसर, 1980, पृ0 483–88।
4. वही पृष्ठ 488–494।
5. कलीम बहादुर, इंडिया एण्ड पाकिस्तान, इंटरनेशनल स्टडीज, वाल्यूम 17 अंक 3–4 जुलाई–दिसम्बर 1978, पृष्ठ 517–27।
6. रमेश ठाकुर , दॉ पालिटिक्स एण्ड इकोनोमिक्स ऑफ इंडियाज फॉरेन पॉलिसी, दिल्ली, 1999 पृ0 40।
7. सुरेन्द्र चोपड़ा, इण्डो पाक रिलेशंस : ए स्टडी ऑफ न्यू चैलेंजिंग एण्ड अपोरचूनिटीज, स्वयं संपादक, स्टडीज इन इंडियाज फॉरेन पॉलिसी, अमृतसर, 1980, पृ0 65।

8. कलीम बहादुर, इंडिया–पाकिस्तान रिलेशंस, सतीश कुमार, संपादक इयर बुक ऑन इंडियाज फॉरेन पॉलिसी, 1987–88, नई दिल्ली,1988 पृ0 88।
9. सुरेन्द्र कुमार, प्रोबलम ऑफ न्यूक्लियर प्रोलिफिरेशन इन साऊथ एशियाः ए स्टडी इण्डियाज मिसाइल डेवलपमेंट प्रोग्राम, कुरूक्षेत्र, 1996।
10. मुनिस अहमर, बार अवाईडैंस विटबीन इंडिया एण्ड पाकिस्तान : ए मॉडल ऑफ कनलिक्ट रेजोलुशन एण्ड कांनफिडेंस–विल्डिंग इन द पोस्ट–कोल्ड वार ईरा स्ट्रेटेजिक स्टडीज, वाल्यूम 16, पृ0 7।
11. वही पृ0 8।
12. राजू जी0सी0 थामस, साउथ एशियन स्कोरिटी इन दॉ नाईनटीन नाई नाटिज : लन्दन, 1993।
13. अयोध्या एण्ड दॉ पॉलिटिक्स ऑफ इंडियाज स्कूलरिज्म : ए डबल स्टेन्डर्ड रिस्कोर्स, एशियन सर्वे वाल्यूम 33 अंक 7 जुलाई 93।
14. संडे टाइम्स ऑफ इण्डिया, 6 दिसम्बर 1992, हिन्दू वीकली, 27 फरवरी 1993।
15. आउटलुक, 16 अप्रैल, 1997, पृ0 40–41, भारत–पाक वार्ता में नया क्या (सम्पादकीय) राष्ट्रीय सहारा, 8 मार्च 1997, निष्फल भारत–पाकवार्ता (सम्पादकीय)।
16. आउटलुक, 28 मई, 1997, पृ0 20–22, टाइम्स ऑफ इण्डिया 13 मई, 1997।
17. फ्रन्टलाइन, 12 मार्च, 1999 पृ0 8।
18. जे0एन0 दीक्षित, इनवेजन ऑफ कारगिल हिन्दुस्तान टाइम्स, 23 जून, 1999।